परिशिष्ट-7 कथा अभिप्राय (मोटिफ)

१. बीज-वृक्ष संबंधी अभिप्राय : ग्रीस पुराणों में

(क) जैतून

ग्रीस पुराकथा के अनुसार ओलिंपस के सभाकक्ष में जब समुद्र के देवता पॉसायडन तथा युद्ध और प्रजा की देवी एथीनी के बीच प्रतियोगिता हुई, तब ज्यूस ने दोनों से भेंट प्रस्तुत करने को कहा। पॉसायडन ने पृथ्वी पर त्रिशूल का प्रहार किया तो जमीन से विश्व के सबसे पहले घोड़े की उत्पत्ति हुई और एथीनी ने धीरे से पृथ्वी को अपने भाले से छुआ तो देखते उस स्थान पर एक बड़ा जैतून का वृक्ष लहराने लगा। एथीनी ने जैतून की लकड़ी, फल और पत्तों की महिमा का वर्णन करते हुए उसे शांति और समृद्धि का प्रतीक बताया। होराक्लीज जैतून का पौधा लेने के लिए हाइपरबोरियंस के देश में गया था और अपोलो के पुजारी से उसे प्राप्त करके लाया था और घोषणा की थी कि ओलंपिक खेलों के विजेताओं के इस वृक्ष की पत्तियों से सुशोभित और सम्मानित किया जाएगा। (ग्रीस पुराणकथा, पृ.९३)

२. जयपत्र (लॉरेल) : डाफ्ने का वृक्ष-रूपांतर

नदी के देवता पीनियस को सुंदरी पुत्री डाफ्ने ज्यूस के पुत्र अपोलो की काम-वासना से बचने के लिए लॉरेल (जयपत्र) के वृक्ष के रूप में बदल जाती है। अपोलो उस वृक्ष को वरदान देता है कि मेरे ताज और वीणा पर तेरी ही पत्तियाँ सुशोभित होंगी, सभी विजेता तेरी ही पत्तियों के मुकुट से सम्मानित किए जाएँगे और तेरी पत्तियाँ सदा हरी रहेंगी। (वही ४१२)

(ख) ओक वृक्ष : दिव्यशक्ति

ट्रापिआस का पुत्र एरिस्कथॉन देवी-देवताओं की सत्ता को नहीं मानता था। इसी अभियान में उसने डिमीटर के ओक-वृक्ष को काटने की आज्ञा अपने सेवकों को दी, क्योंकि उस अपने भोजकक्ष के लिए बढ़िया लकड़ी की आवश्यकता थी। डिमीटर का ओक-वृक्ष जंगल के अन्य सभी वृक्षों से विशाल एवं पुरातन था। इसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली थीं। जनसाधरण का विश्वास था कि रात्रि के समय वनदेवियाँ उसकी छाया में आती हैं। देवी के अनुयायी इस पवित्र वृक्ष की पूजा करते तथा इसकी डालियों पर पुष्पमालाएँ चढ़ाते। जब इस वृक्ष पर एरिस्कथॉन ने कुल्हाड़ी मारी तो ओक के तने से रक्त की धारा बह निकली और एक स्त्री-स्वर ने शाप दिया कि देवी की क्रोधाग्नि से तू जलकर राख हो जाएगा।

(ग) ओक-वृक्ष : ज्यूस देवता का प्रिय वृक्ष

ग्रीस पुराणकथा में फिलमॉन और बॉसिस ज्यूस देवता के वरदान के अनुसार एक साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। एक दिन जब दोनों पति-पत्नी मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े उस मंदिर का इतिहास बता रहे थे (जो वास्तव में उनका अपनी ही घर था और फीजिया पहाड़ी के पासवाले गाँव के शापग्रस्त हो जाने पर एक मंदिर के रूप में बदल गया था) तब उन दोनों के शरीर से पत्ते निकलते हैं और दोनों ही ओक-वृक्ष बन जाते हैं। ओक-वृक्ष ज्यूस का प्रिय वृक्ष माना गया है। डोडोना का ओक-वृक्ष तो देवता द्वारा अभिप्रेरित होकर भविष्यवाणी किया करता था और दूर-दूर से लोग यहाँ प्रश्न पूछने आते थे। (वही ५९)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

(घ) चिनार : पर्सीफनी का प्रिय वृक्ष

चिनार को ग्रीस-पुराण-कथाओं में महारानी पर्सीफनी का प्रिय वृक्ष माना गया है। डेडीज मृतात्माओं का अधीश्वर देवता है, उसने डिमीटर की पुत्री पर्सीफनी से विवाह किया था परंतु जब वह सुंदर वनकन्या मिंथी के सतीत्व को भंग करना चाहता था, तब पर्सीफनी ने मिंथी को पुदीने के पौधे के रूप में परिवर्तित कर दिया और जब वह रूपसी ल्यूसी से संसर्ग करना चाहता था तब पर्सीफनी ने ल्यूसी को श्वेत चिनार के वृक्ष-रूप में बदल दिया।

चिनार हेराक्लीज का भी प्रिय वृक्ष है। उसने इस वृक्ष की पत्तियों का हार सिर पर धारण किया था। (वही ६६)

(ङ) हरियाली और वसंत की देवी : पर्सीफनी

ग्रीस पुराकथाओं में डिमीटर को कृषि की देवी माना गया है। डिमीटर की पुत्री पर्सीफनी हरियाली और वसंत की देवी है। डिमीटर अपनी पुत्री का वियोग सहन नहीं कर सकी थी इसलिए जब हेडिज ने पर्सीफनी का अपहरण कर लिया, तब वह उदास हो गयी और इसके परिणामस्वरुप धरती पर फूलों ने खिलना छोड़ दिया। हरी-भरी दूब सूखकर काली पड़ गयी, पेड़-पौधे मुरझा गए। किसानों ने खेतों में बीज डाले, तपते सूरज के तले बीसियों बार हल चलाए लेकिन एक भी अंकुर नहीं फूटा। अकाल पड़ गया। धरती मानव-रहित न हो जाए, इस आशंका से ज्यूस ने ऐडीज को संदेश दिया कि वह पर्सीफनी को लौटा दे, परंतु पर्सीफनी मृत्युलोक के अनार के दाने खा चुकी थी, इसलिए उसका पृथ्वी पर सदा रहना तो असंभव था, अंत में तय हुआ कि पर्सीफनी चार महीने टारटॉरस में रहेगी तथा आठ महीने धरती पर।

जब पर्सीफनी धरती पर आती तो सूखे हुए पेड़-पौधे हरे हो जाते, खेतों में फसलें सोने-सी चमक उठतीं। जब धरती से लौटती तो पतझड़ की आँधियाँ चलने लगतीं, जाड़ा आता और बर्फ गिरती।

(च) सुनहरे वृक्ष के सेब लाना

ग्रीस पुराणकथाओं के वीरनायक हेराक्लीज को जो दुःसाध्य काम दिए गए थे, उनमें एक था-हेस्पिरिडीज के सुनहरे वृक्ष से सेब लाना। यह सेब वृक्ष पृथ्वीमाता ने ज्यूस और हेरा के पाणिग्रहण के अवसर पर हेरा को भेंट किया था। हेरा को यह वृक्ष औरइ सके फल इतने अच्छे लगे कि उसने इस पेड़ को अपने दैवी-उद्यान में लगा दिया और इसकी देखभाल का काम एटलस की पुत्रियों को सौंप दिया। स्वर्ण वृक्ष के सेब लाने के बदले में हेराक्लीज ने पृथ्वी को अपने कंधे पर लेने का प्रस्ताव किया था और पृथ्वी को हेराक्लीज के कंधों पर टिकाकर एटलस बाग से तीन सेब तोड़कर लाया था। (वही ३९९)

३. अफ्रीकी पुराकथा-अभिप्राय

(छ) वृक्ष पत्नी

अफ्रीका की एक पुराकथा के अनुसार एंजामे ने पहले मनुष्य का सृजन किया, उसा नाम रखा-'फाम'। दूसरा मनुष्य सेकूमें था जो वर्तमान मानव-जाति का आदि पूर्वज है।

सेकूमें ने एक वृक्ष से अपने लिए एक पत्नी का सृज्न किया और उसका नाम रखा ऐंबोग्वे। सेकूमें और ऐंकूमें और ऐंबोग्वे ने मिलकर मानव जाति का सृजन किया। (कादंबिनी : नवंबर'८७)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

४. चीनी पुराकथा-अभिप्राय

(ज) धान : देवी का स्तन्य

चीन की पुराकथा के अनुसार धान के पौधे तो बहुत शुरू से थे, लेकिन उसके चावल नहीं उगते थे। गुआन पिंग नामक देवी ने देखा कि लोग जंगली कंद-मूल और शिकार से बड़ी कठिनाई से पेट भर पाते हैं तो उसे बहुत दया आती है। देवी धान के पास गयी और अपने स्तनों से दूध की धार निकालकर धान की बालियों को परिपूर्ण कर दिया और बालियाँ सफेद चावलों से लहलहा उठीं। (कादंबिनी : नवंबर'८७)

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.